Subject - Psychology
class - UG, Sem - V MIC
Unit - Introduction / - 01
Topic - Meaning, Nature of clinical Psychology.
Date -
Name - Dr. Shyam Sundar Sharma.

Ques. :- नैदानिक मनोविज्ञान के अर्थ और स्वरूप का वर्णन करें।

Ans. :- नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसमें मानसिक रोगों, भावनात्मक समस्याओं तथा असामान्य व्यवहार के निदान, मूल्यांकन, उपचार, और रोकथाम से सम्बंधित तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

नैदानिक मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य है, व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारना तथा उसे समाज में समायोजित जीवन जीने में सहयोग करता है।

* नैदानिक मनोविज्ञान के स्वरूप :-

नैदानिक मनोविज्ञान के स्वरूप निम्न प्रकार हैं-

(1) व्यावहारिक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान :-

यह मनोविज्ञान के सिद्धांतों को वास्तविक जीवन की मानसिक समस्या पर लागू करता है।

(2) निदानात्मक स्वरूप :-

इसके अन्तर्गत मानसिक रोगों और व्यवहार सम्बंधी विकारों की पहचान एवं निदान पर विशेष रूप से बल दिया जाता है।

(3) उपचारात्मक स्वरूप :-

~~चिकित्सा,~~ इसके अन्तर्गत मनोचिकित्सा, परामर्श और व्यवहार संशोधन द्वारा मानसिक समस्याओं का निदान किया

P.T.O

जाता है।

(4) वैज्ञानिक आधार :- इसमें परीक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है।

(5) व्यक्ति- केन्द्रित दृष्टिकोण :- प्रत्येक व्यक्ति की समस्या को उसकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि के संदर्भ में उनके विकास पर ध्यान दिया जाता है।

(6) बहु आयामी स्वरूप :- यह जैविक, सामाजिक, भावात्मक एवं सांस्कृतिक सभी पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है।

(7) समन्वयात्मक स्वरूप :- नैदानिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोचिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ता इत्यादि के साथ मिलकर कार्य करते हैं।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि नैदानिक मनोविज्ञान का स्वरूप मानव कल्याण पर केंद्रित, नैदानिक, व्यावहारिक और उपचारात्मक होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा एवं सुधार करना है।